

2470

विकास

२२८ १९८८/५



(1)



(2)

उत्तर

गीताः १

इन्द्रमोगणेष्वदा॥

उमाशंकरकुमरा॥ तारवया संसारदुस्तरा॥ हुं-यी
 यकु॥ १॥ तारकब्रह्मीचाविवर्ण॥ त्वं पदतत्पदं त्रा
 धनकर्ण॥ ऐसियापदा-चानिधर्मि॥ तुझेनीच॥ २॥
 ९ आज्ञानसांजवेद्वा॥ जिसिरज्ञानसिलाकाबुधि
 चेजोक्ते॥ उघडुनीसिध्य-यी विवचेषप्रकाशव
 स्तु॥ ३॥ नरिगुरुव हौसिद्ववदा॥ आगमनिगमा
 चवदा॥ त्राउदं त्रानाचा चोहदा॥ दाविसीहे
 ल्या॥ ४॥ या धारापासुनोसहश्रद्धावरि॥ उ
 र्वमार्ग-यीकुसरि॥ पन्नाम्पामानुकाचीभराव
 रि॥ शृष्टीरुचने-यी॥ ५॥ साहि चक्राचाजपु॥
 ध्यानवर्णदक्षी संकल्पु॥ पुजानर्पणनैवेयन्तु

उरार

गीतां आ

श्रीहाट

(2A)

कु॥ संत्रनाजसहजु॥६॥ पञ्चेमेसातचेत्रल्लाचा
टा॥ औटपिठत्रीकुटेगोल्हांटा॥ स्त्रमरि चैतन्य
निटा॥ ब्रह्मरंध्मुरसुख॥७॥ ऐसाचौदाविधा
चागोस्पाविं॥ आर्थउर्धमस्थाप्नावेवि॥ सबाख्य
अंतरिमज्जिभावि॥ वंदिलातो॥८॥ जोकांओं
दिअंतियेकनुं॥ हृषाउनीबोलिजेयेकदुंनु॥ ये
(कुचपरिनवपरियं)॥ मायाविजाता॥९॥ सु
न्यापासुनीधरिता॥ स्वोजणीयां आंखें आंखु
चाठविता॥ काठलिसंसाराचीवार्ता॥ शृष्टीक
मर्मी॥१०॥ परतोनीतोचीओंखुभांजीला॥ अं
स्वअंखनाहिजाता॥ सुन्याचाहिठवोपुसिला॥

Joint Project Sanskrit Mahavidyalaya, Mahabali, Dhule and the Sanskrit Department, Mumbaikar, Mumbai.

(3)

२

ब्रह्मविभाकपाळी॥११॥ तैसाज्ञोधनऋसुसाध्युतु
 स्व॥ तुं-चीजीवसि विषर्वा॥ छपं-चलउला
 मनज्ञाख्व॥ आसि पदसि ध्यच्ची॥१२॥ सि वज्ञात्तो
 सनीधानी॥ यकी-चीला प्रवेनादोन्ही॥ छंका
 रा-चीधउणी॥ काये सांगो॥१३॥ ब्रह्मविजाजा
 लं-चेलण॥ तोची छंकार बोलणबोलण॥ २
 वासि छणि चेलक्षण॥ आगोचरते॥१४॥ म
 नाचेनीदेटें॥ पवेनाचेनीसेवटा॥ ईश्वराचे
 नीकट॥ बोनलें कैसें॥१५॥ आकारउकारम
 कार॥ तोची ब्रह्माविष्णुमहेश्वर॥ कैसाज्ञो
 मुणाचाजागर॥ विस्तारत्वा॥१६॥ स्याठं विजा
 चनीयोग॥ परमात्मयाचेनीसंग॥ येकाक्षरब्र

Digitized by the Baranwale Sanskriti Mandal, Shukla and Deo Rachna Pratishthan, Mumbai

(3A)

लवेगा॥ बोलिलेस्त्रिवा॥१७॥ तेवकारिलेंगप्र
 चेंडु॥ तुजनंथरचनेचीचाडु॥ तरितरगीते
 चेंकांडु॥ विस्तारिपां॥१८॥ आगमनिगमाचेनी
 मधनें॥ शाश्वाचेनी अंतर जीवन॥ मारथइति
 हासपुराण॥ व्यासेंकेलि॥१९॥ तेआठरापर्वस्ता
 रथ॥ यांतसाहावेभीष्मपर्वज्ञेश्यो॥ नननारव
 यागुजतेश्यो॥ बोलिलेदोद्यो॥२०॥ तेगीताआशा
 इशाध्याई॥ बोलिलंपुराणस्त्रावि॥ धर्माधर्मउ
 पनिशाहसाववि॥ वेहांतआर्थी॥२१॥ ऐस्तिजेसार
 वस्तुगीतारा॥ तिथ्यचेंसारउत्तरगीता॥ करणीव्या
 सस्तमर्थी॥ कायेनानु॥२२॥ रुच्छल्यावेदशाश्वा
 चीयाकाटा॥ याव्यासेकेलि याचोरवटा॥ जैसावृ

(५)

२

सविक्षारुपांठा॥ फुलाफ़क्का सहितु॥ २६॥ याव्यासा
 करनीनमन॥ तेण दिघलिआनुज्जा॥ तं वेशारदेच
 वरदान॥ वोडं बरलें कैस॥ २७॥ तेशारदा केसीहे
 खिली॥ जेकां ब्रह्मविद्यामाउलि॥ वेदशाश्रगो
 ताबोलिली॥ ज्ञाने सित्र॥ २८॥ जेकां ब्रह्मीचीनी
 जकवा॥ सत्राविचाजीकाव्य॥ जेकां मुकुन्मा ने
 वेल्हावा॥ परमस्थानी॥ २९॥ जेसिसुयोचीप्रभा
 मुध॥ मुयीच्चिरवेप्रसिध्दा॥ तेसाआत्मबोधा
 चाबांषा॥ जीयेचेनी॥ ३०॥ जानंदाच्चीयेसागरी॥
 कीउत्तसेचीत्तलहरि॥ सत्त्वगुणाचासंदिनी॥ वेच
 छजीयेचे॥ ३१॥ अंकाराचीज्ञार्थमात्रका॥ आ
 सिपदप्रतिपादका॥ तत्त्वज्ञानीयांसिरेक्ष्यवादका॥

गीताभा॑

उत्तर

(GA)

प्रतिपाद कावेहांति॥२१॥ लेसि प्रसन्नवदन॥ ज्ञा
रदाबोलिलीवचेन॥ चीतीधरस्तीप्रबंधरचेन॥
नीनुकि सि धीने ईनमी॥३०॥ काम्पिति पिठनाईकी
धीभांडारि॥ ज्ञाक्षरले सांटविली नानाकुसरी॥ या
जानध्येपदा धीथोरि॥ रल पारखिया॥३१॥ तियेची
आनुज्ञाजालि॥ आनंहज्जाधीकोलि�॥ मतिस
रल महरलि॥ प्रबंधरचेन॥३२॥ आध्यकाव्यक
तोवात्मोकु॥ तेणोवरहि धत्तास्ययं प्रकाशकु॥
वसि द्वादि करनीसै पर्कु॥ संत महंताचा॥३३॥
श्रीआदि नाथ मिन गोरक्षा॥ नाग ऊनकनेरि आचा
रव॥ सिद्धस्ताधकाकरनि मुरव्या॥ श्रोतयानमना॥३४॥
मग श्रीगुरुबोलिला॥ उत्तरगीतेवा आध्यावपहिला॥

(5)

तोस्त्रोकार्थवहिला॥बोलवेगी॥३६॥
 स्त्रोकआर्दुनउ
 वाच॥यथकंनिष्कलंब्रह्मव्यासांतितंनिरंजनं॥
 निर्मलंपरमंदिव्यंसप्रमेयमनुत्तमं॥१॥टिका॥त
 रिनीष्कलंकयकब्रह्मा।जेयंचेसुतापेत्ताकडिलव
 मी॥ईद्रियव्यापरधमी॥नाहिजेयो॥३७॥जेयंप्र
 पंचाचामवनाहि॥स्परयंप्रकाशुदिव्यतेजपाहि॥
 प्रमयातितचोरवहि॥रसेंब्रह्मबोलिजे॥३८॥जे
 यंवात्कीचेकाआवकंकनसो॥हुणउनीष्कलंवी
 कब्रोलिलेरेसें॥जेनरहितनीरंजेनकेसें॥सां
 गावेंजी॥३९॥स्त्रोका॥यप्रतकर्मभविज्ञेयंविना
 शात्पतिवज्जितिंकैवल्यंकेवलंशातंशुद्धमये
 ननिर्मलं॥३॥टिका॥ज्ञोकांतर्कशाश्वानातुडे॥

(5A)

रेसेंज्ञानजेचेंधडकुडें॥ पृष्ठीसंकारावेगक्लेकोडें॥
 तेसांगावेंजी॥ ३०॥ मोलामापागणनानाहिंलेश॥
 केवल कल्यनारहितव्यांत्र॥ परतलीयाकुधीसञ्च
 यंत्र॥ निर्मलदेसेंकालोज्जी॥ ४०॥ ज्ञानक॥ कारणं योग
 निर्मुक्तं हेतुसाधनवज्जीति॥ निवारागस्त्वितं सुक्ष्मं
 इमाख्यज्ञेयं स्वरूपिणी॥ ग्राहिकाम् योगियाचेसुट
 केचें कारण॥ जे थं पारसलें हेतुसाधन॥ जोक्वा
 घालुनीयां अंजन॥ मजनीनववावेंजी॥ ५०॥ गालि
 याचेकुसक्वाचेंआग्र॥ यावर्दिलजेसुकुमार॥ जे
 थेंआवेधचेष्टकुर॥ सुकोनीजाति॥ प्रणवाचेंअ
 वाग्जजाग्र॥ सिद्धसुक्ष्मलंकाराह्वर॥ जाणनया
 चेंमुक्तस्त्रानसार॥ इन्नानस्वरूप॥ ६०॥ इन्नानेंकरुनी

(6)

९

जाणेणं॥ ते ज्ञये रेसें वोक्ष रवणों॥ तथा उम्मया वि
 लक्षणों॥ नया आव्ययरूप के सें॥ ४॥ श्लोका॥ निरु
 णं परमं गुह्यं सीन्नान् जनसम प्रभं॥ तत्र क्षणादव
 मुच्यं ते विज्ञानं बृहदि केऽन्ना॥ ५॥ टि का॥ जे गुह्य
 त्रिगुणा परतें॥ क्षिन्नज्ञा तरस मत्वें॥ जेन्ममृसपा परा
 सित॥ क्षणमात्रे दग्धकरि॥ ६॥ रेसें जे विष्वज्ञान
 न॥ संसारा पास्ताव साउवण॥ केऽन्नावा सावधान
 पण॥ सांगावें मज्ज॥ ७॥ श्लोका॥ श्रीभगवानउवा
 च॥ साधुपार्था महाब्राह्म। बृहदि मर्नस्तिपां उवः॥ ८॥ टि का॥
 तरिज्ञानब्राह्म साधुपार्था॥ मनब्रुधि ठेविपव
 नमाथा॥ तदिपुसि लोया तवार्था॥ अब्रोष सांगे

The Kavawade Sanskrit Manuscript Database
 Department of Sanskrit & Persian, University of Yasawade
 Prof. Dr. Jayanta Chakrabarti

उत्तर

गीतांआ

(6A)

नभावें॥४७॥ श्लोका॥ अत्ममंत्रस्य हं स स्य परस्य
रं समाश्रयं॥ भावना गतिका म्यानां भावना श्रौव
मेवच॥४८॥ दिका॥ तत्र आत्ममंत्र सोहं ऐसा॥ परस्य
रं से सारकैसा॥ ये वर्यकां जीता सावावो ऐसा॥
काम्याचिये आवाहि॥४९॥ संवाद सुखवाची गोहि॥
यकसुन्त्रये कपणे आहि॥ देस्तिष्ठावना उभउनी
गुहि॥ नां दत्तजासती॥५०॥ सर्वसंज्ञाचाराजु॥ ह्लण
उनी मंत्रराजसह छु उमात्रुकाच्यें जीवनकाजु॥
बिजरपकिं॥५१॥ श्लोका॥ वारिगणां मजहं सः हुं
पदहृददविति॥ सोहं त्रुत्वा क्षुरश्रौवा॥ कुटस्थेम
चले धृचं॥५२॥ दिका॥ तत्र सर्वजीवाचाराहरी॥ प
रमहं संपदाचीथोरि॥ आर्वड आत्मतसे गोचरि॥

(७)

परिनेण तिव्याइना ॥५१॥ सोहं कारजे बोलि जेते ॥
 तेआनाह्यरहुणिजेते ॥ कुटस्थियाणिआचेळवे
 दांतवेते ॥ सांगति ॥५२॥ शुद्धीरचेनेपुठेसकारा ॥ मा
 गेंराहेतोहरकारा ॥ सकारहुतपुठेहकारा ॥ स
 कारमारे ॥५३॥ जिकुटिआसहुहुणउनीबोलि
 जे कुटस्थु ॥ जोकांडालांडियामहंसु ॥ परमात्मा ८
 सतंत्रु ॥ याचीनवें ॥५४॥ तरहंसानसोहिं ॥ स
 मकरोनीपाहि ॥ तरपरमाओचिउहिपुहि ॥ क
 राविचीगा ॥५५॥ आजे पेचेजे पविजा ॥ सुह्मज्ञे
 काराह्यनिजा ॥ ह्यराह्यरनादविंदसहजा ॥ ध्यनी
 रूपकिं ॥५६॥ सरतोवात्तीयुक्तमयंकु ॥ विंदुरपेंक
 व्यावंतु ॥ भुताकारं प्रसवत्तु ॥ चतुर्ष्यहाकाराचेनी ॥५७॥

Rajendra Singh Mandal, Bhudeo and the
 University of Alberta
 Joint Project

उत्तर.

गिराजा
१

(७A)

स्तु क्ष्यादि सेवलास कारा ॥ हृषण उनी बोलि लासी हसा ॥
आत्ता बोलो आक्षरा ॥ कुटस्त ज्ञा ॥ ८८ ॥ सुर्य श्वरपंजो
ह कारा ॥ जो कां आनंद रूपा ज्ञाक्षरा ॥ क्षरा चेनी योगे
संसारा ॥ याच्चाचाले ॥ ८९ ॥ संक्षा राचें कामतयाचे ॥
नांवतरे परमा त्सायाचे ॥ म्होग औठपि ठीचे ॥ स
त्ता करन्ती ॥ ९० ॥ रेसाउ भये संधीचा विवरा ॥ तोम
ध्येगोळ सुद्ध अंकार ॥ उत्तम पुरुष निर्धारा ॥ नीजा
नं दभरित्तु ॥ ९१ ॥ तं चुक्तं अस्तिपद तियेच्चिप्रमाण ॥
सिद्ध संकेत वे हांतिवर्ण ॥ वे दांत सिद्धांत चीख
ए ॥ आनुस्मवावें ॥ ९२ ॥ हृषण उनी पिंडे मुक्तपदि मु
क्त ॥ दोहं चहि इन्नान तेथें मुक्ता ॥ तिहि चापुरलास
केता ॥ तो मुक्तन संहे ह ॥ ९३ ॥ क्लोका ॥ पिंडे मुक्ता

(8)

६

पदेमुक्तारूपंमुक्तावाजानना॥रूपालितोसयोमुक्ता
 स्त्रेमुक्तानात्रसंशया॥८॥टिका॥ऐसेंगौरचेनीव
 छृष्ट॥स्थामि सीसांगीतलें लोक्या॥तंतुव आस्तिप
 दभेद॥निर्णयोकेला॥ब्धा चेते सा चौपैष्ठरवा
 आध्यार्द॥आजुनास्त्रिसांगीतलें क्रूर्यादेवि॥९
 ७
 राक्षरउत्तमपुरुषहि॥निर्णयित्वा॥८॥ऐसाउक
 लुचाकुलगुरुस्त्रखें॥जेनकहितीचौमुख्वी॥झक
 विलीचाब्धा चेनोस्त्रवा॥संख्यात्मका॥८॥ऐ
 स्त्रियाकोलाचीआनुचीतमति॥उपस्थाहिजीम
 हंति॥माशीयाकोलाचीयुक्ती॥आरजआसें॥९॥
 श्लोका॥तद्वीद्वाचक्षरंप्राप्यजन्मरणाजेन्मनि॥

(8A)

स्थिरबुधीरसंमुठो ब्रह्मविद्वल्लणीस्थिती॥७॥
 का॥ विद्वजे न इत्तानि येऽजे आपान॥ जया सी प्राप्ति
 हे आनाक्षर॥ तेउत्तरल्लेगापार॥ जे न्म मरणाच्चे॥८॥
 रे से हृष्टु धी जे अथील्ले॥ ते धी ब्रह्मविद्वभल्ले॥
 स्वयें बोधधाल्ले॥ ते ब्रह्मची फुडे॥९॥ श्लोक॥ का॥
 कि मुखं कका गांत मकारं छ्वेतना धृति॥ ककारां
 त च ल्लुत्पोस्थिष्ठकी अर्थं संप्रति पथते॥१०॥ टिका
 का ल्लणी जे पुरुषवाचु॥ विल्लुणा विश्वी वाव्दसा
 चु॥ दोहिं च संधि मुखासासचु॥ नमज्जे संघव
 काशो सी॥११॥ पुरुषसो कीलावात्ती॥ या-यी नावे
 ककारसमाप्ती॥ ते उगवलि यानाहि वेत्ती॥ प्रत्यु
 त्तियोवै॥१२॥ ये कये कावरिलोल्ले॥ ये कंगी क्षेये कंग

(9)

छे॥ जिसे गंगये मुने चेक स्त्रोक्ल॥ चंद्र सुर्य काग॥ ७२॥
 दे वज्राली चेतना रूप॥ जीये चेनी सृष्टी चंरूपा पु
 रष्ट्रवास संस्थप॥ बोलिये ला॥ ७३॥ आणी पुरुष
 जै नीवीकार आटे॥ तै ज्ञात्ती चाठवउरे कोठो॥ दो
 हिंची समात्यो ने ठेंबाटे॥ तयाहें काये झाणावे॥ ७४॥
 हा आर्थु बोलता आवघड॥ मना वाचे स्त्रि सांक
 डा॥ तै जाणा वेंफुडा॥ उरुसे वेना॥ ७५॥ जो कांवे दां
 ति प्रति पाथ्य॥ आणी सिध्यांति सीध्या॥ जे थें पुरलि
 आवधी संदु॥ काळा चाप॥ ७६॥ प्लाका॥ यावत्पत्रा
 लुरवगा कारं तदा कारं विचिं येन्द्र॥ रवं मध्ये च प्रति त
 श्वयं रवं च ब्रह्म सनातनं॥ ७७॥ रवं मध्ये कुरु चात्मनं
 आत्म मध्ये च रवं कुरु॥ अत्मानं रवं मध्यं कुरु॥ नरकिं

(१८)

चीदुप्ति चींतयत् ॥ १२ ॥ हि का ॥ आर्जुना आत्मा के सा
 ज्ञाण ॥ आकाशा सारिखा हे खण ॥ आकाशा हो उन्होंनी ची
 न ण ॥ आवकाश हे ब्रह्म निरंतर ॥ १७ ॥ आकाश हो उ
 नी आवकासि रीच्या वो ते से स्वतंत्र ब्रह्म जाए चैव ॥
 आत्मया सीन स्त्रा सारिखें करा दो ॥ निर्वांत पण ॥ १८ ॥
 मुन्ये मुन्यमो जिले ॥ या चेना हि पण यो जीले ॥ रूप
 निरमुन्ये निरंजेन सा धिले ॥ आवधीया सहिता ॥ १९ ॥
 वाक्षा वाक्ष जे यें मार्ग वले ॥ मन पवन जे यें हार
 पले ॥ माया ब्रह्म जे यें है सप्तले ॥ समरस ले ॥ जी
 य संदि ॥ २० ॥ ते संधी जाया कवलि ॥ तुर्ये ची सीमा
 (पुरलि) ॥ चक्र श्वे मुन्य बुडि दि धलि ॥ उन्मनि सी ॥ २१ ॥
 ऐसे श्री गुरु मुखे जे लुझा चले ॥ ने चीमि हृष्णा वैव

(१०)

हिलें॥ आर्जनाचेंमनउचंबवले॥ कोसंडला आने
 दु॥ ८२॥ श्लोका॥ बहिव्यीमंस्त्रितंनीयं॥ नावागे
 चव्यवस्थितं॥ निर्मलंतंदिजानियोत् शाऊर्मि
 रहितंस्तीवं॥ ९३॥ टिकातातीयोगियाचेंस्त्रितोल
 स्थणकेसे॥ त्रावदस्थणरहितबाहिजज्ञाकाष्ठो॥
 नाविकाचेलागस्त्रमध्यदेवो॥ त्रुषुन्मालोपि
 ९४॥ तनिर्मलनियास्त्रित॥ सुधाल्जानजापातित
 वात॥ साहितस्त्रितवात॥ सिवपद॥ ८४॥ ते
 स्त्रमधापिपाशाचाभावो॥ त्रोकमोहोमानाचास्त्र
 भावो॥ जगामरणसावेको॥ त्रात्ररासी॥ ८५॥ श्लो
 का॥ प्रभास्त्रुन्यमनःक्तुन्यंबुधिक्तुन्यनिरामयं॥
 सर्वत्रुन्यतदात्मेति॥ स्त्रमाधिस्त्रस्यलक्षणं॥ ९५॥

e

१

One page of the Samskruti Manuscript of the Yajur-Veda
 from the collection of the Sanskrit Mandal, Dhaka and the Year
 1900 AD. It is written in the Devanagari script on palm leaves.

(१०८)

रिका॥ ज्ञागृतिजालिया सर्वहि देखणे ॥ यास्येनों
 वप्रस्ताल्पणे ॥ मनसंकल्पविकल्पस्य प्रौं ॥ बोलि
 येलें ॥ ५३॥ बुधिहारपे नेत्रुञ्जुत्पी ॥ चौथी तुये
 चीस्थिति ॥ हेत्रोच्चन्यप्रतिनीजाणविगा ॥ ५४॥
 ब्रह्माविष्णुरद्रसर्वेष्वरा ॥ हेत्याही आस्मिना
 नीदेहि निरंतरा ॥ वाचो सहितचेतुरा ॥ ये कार्ये
 घिति ॥ ५५॥ ज्ञागृति स्वप्न निद्राहरपलि ॥ तेना
 हि पणे अन्यजालि ॥ ईयपर उन्य स्थीती बुझा
 वलि ॥ तत्कलानीयासी ॥ ५६॥ श्रीगुरकुपालव
 ल्लाहे ॥ ईश्वराचेनी आनुग्रहे ॥ स्थिरबुधी जा
 कस्मातहोये ॥ समाधी लक्षणाची ॥ ५७॥ म्लोक ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com